“ध्वनिलेखागार:परंपराओं का ख़जाना (उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के परिप्रेक्ष्य में) एक अध्ययन”

Dwanilekhagar Paramparao Ka Khazana (Uttar Bhartiya Shashtiya Gayan ke Paripreksh mein) -Ek Adhyayan”

Abstract

To

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVESITY OF BARODA FOR THE AWARD OF THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

In

MUSIC (VOCAL)

BY

PANDYA PRANAV HITENDRAKUMAR

UNDER THE GUIDEANCE OF

DR. ASHWINIKUMAR SINGH

DEPARTMENT OF MUSIC (VOCAL)
FACULTY OF PERFORMING ARTS
THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA
VADODARA-390001

2016-2024

Registration No. FOPA/54
Registration Date:12 May

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत आदिकाल से अविरत रूप से चला आ रहा हैं। भारतीय कलाए गुरुमुखी रही हैं और यह अद्‌भूत परम्पराओं का निर्वाह एक पीढ़ी से आगामी पीढ़ी तक अविरत रूप से प्रवाहित होता रहा हैं। जिसमें अनेक गुरुजनों, वाज़ेकारों, कलाकारो, गुनिजनों तथा विवेचको का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। अनेकविध राग, रचनाए एवं सौंदर्यात्मकता को देखने का और अनुभूति करने का अभिगम व्यक्तिगत रूप से भिन्न भिन्न रहा हैं। इसलिए, यह परंपरागत कलाए ज्यादा से ज्यादा नए आयामों तथा विभिन्न द्रष्टिकोण प्राप्त करती रही हैं।

यह तमाम कलाए आगामी पीढ़ी में संगृहीत और संवर्धित होती रहे इसलिए अनेक ज्ञाताओं ने प्रयत्न किए हैं। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के गायन विषय में पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी और पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी द्वारा परंपरागत बंदिशों को संगृहीत करने तथा अनेक वाज़ेकार-कलाकारो की सांगीतिक सोच को आगामी पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए स्वरलिपी की रचना की गई। जिससे अनेक बंदिश और रचनाए आज तक जीवंत रही हैं परंतु, ध्वनिमुद्रण की प्रौद्योगिकी के विकास के बाद अत्यंत सचोट रूप से विचारो का दस्तावेजीकरण और अन्य तक स्पष्ट रूप से पहुंचाना संभव हुआ हैं। ध्वनिमुद्रण के यह अभिलेखागार अभ्यासु के लिए पथप्रदर्शक और उनकी परंपराओं के निर्वाह के लिए आशीर्वादरूप हैं।

गुरूपरंपरा से अनेक वर्षो की कठिन साधना के बाद प्राप्य ज्ञान आगामी पीढ़ी को वारसागत न दे सके और उनकी साधनाओं की पराकाष्ठा, विचार एवं कला परत्वे उनका अभिगम नवोदित कलाकारो, वाज़ेकारों तक न पहुँचा सके तो संस्कृति पूर्णरूप से खिल नहीं सकती। एसे ध्वनिलेखागार अनेक गुरुओं के ज्ञान को उनके ही स्वमुख से प्रस्तुतीकरण करा सकते हैं। ध्वनिलेखागार के माध्यम से तमाम गुरुओं और उनकी परंपराए जीवंत रहती हैं।

प्रथम अध्याय के अंतरगर्त शोधकार्य का विहंगावलोकन किया गया है। यह एक पूर्वभूमिका है की किस तरह से शोध कार्य के उद्देश्य एवं मर्यादाओं के साथ निष्कर्ष तक पहुंचा गया है। इस अध्याय में शोध कार्य के लिए उपयुक्त किए जाने वाली क्रियाविधी का ढांचा प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय- प्रस्तावना के अंतरगर्त पूर्व भूमिका: यह अध्याय एक परिचय प्रदान करता है जिसमें प्रारंभिक बातचीत का संदर्भ दिया जाता है। इसके अंतर्गत, हम पर्यावरण की वर्तमान स्थिति, समाज, और कला की अवधारणा के प्रति ध्यान केंद्रित करते हैं। कला: कला एक सामाजिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम है। यह लोगों के विचारों, भावनाओं, और अनुभवों को साझा करने का एक उत्कृष्ट तरीका है। प्रवर्तमान समय में प्रस्तुत संशोधन की आवश्यकता: आधुनिक समय में, कला और साहित्य के क्षेत्र में वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति हुई है। इस संदर्भ में, प्रस्तावित संशोधन का मुख्य उद्देश्य यह है कि इससे कला के क्षेत्र में विविधता और गुणवत्ता में सुधार हो। पूर्वधारणा: संशोधन के पूर्वधारणा में, हम प्राथमिक अध्ययन के क्षेत्र में पिछले कामों का समीक्षा करते हैं और उनके अभिप्रायों को समझते हैं।प्रस्तुत संशोधन के उद्देश्य: इस संशोधन का मुख्य उद्देश्य यह है कि हम कला के क्षेत्र में नई परिभाषाएं और नई समझ विकसित करें, ताकि विशेषता और गुणवत्ता में सुधार हो सके। संशोधन का व्याप और मर्यादायें: इस संशोधन के सामान्य क्षेत्र, उद्देश्य, और मर्यादाओं की चर्चा इस अध्याय में की जाती है। हम इसके विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार करते हैं। संशोधन क्रियाविधि: अंत में, हम इस संशोधन की क्रियाविधि को व्यक्त करते हैं, जिसमें हम अपने अध्ययन की विधि, संसाधनों, और प्रायोगिकता को स्पष्ट करते हैं।

इस अध्याय के माध्यम से, हमने प्रस्तावित संशोधन की भूमिका और महत्व को समझा है और इसके प्रमुख धारावाहिक प्रयासों को प्रस्तुत किया है। यह अध्याय हमें आगे की प्रक्रिया में मार्गदर्शन प्रदान करता है और हमारे अध्ययन के प्रमुख उद्देश्यों को स्पष्ट करता है।

द्वितीय अध्याय भारतीय शास्त्रीय संगीत–परिचय से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। भारतीय संगीत एक ऐसी अमूल्य धरोहर है जो भारतीय सभ्यता के आधार स्तम्भों में से एक है। भारतीय संगीत को दो प्रमुख शाखाओं में विभाजित किया जा सकता है: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत और दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत। इन दोनों प्रमुख शाखाओं का परिचय देते हुए, इनकी विशेषताएँ, गायन शैलियाँ, और उनका महत्व समझा जा सकता है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत-उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत उत्तर भारतीय क्षेत्रों में प्रचलित है और भारतीय संगीत की प्रमुख शाखा मानी जाती है। इस संगीत में गायन, वादन, और ताल का महत्वपूर्ण

स्थान है। उत्तर भारतीय संगीत की शैलियों में ख्याल, ठुमरी, ध्रुपद, टापा, तराना, ग़ज़ल, चैती, भजन, और कविता गायन शामिल है। हर एक शैली में अपना महत्वपूर्ण स्थान है और गायक द्वारा उनकी विशेषता को प्रकट किया जाता है। उत्तर भारतीय संगीत में गायन के घराने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो शास्त्रीय संगीत की परंपराको प्रस्तुत करते हैं।

दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत-दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत दक्षिण भारतीय क्षेत्रों में प्रचलित है और उत्तर भारतीय संगीत के साथ तुलना में थोड़ा विभिन्न है। इसके लिए कर्णाटक संगीत,और कर्णाटक गायकी का विकास कार्यक्रम कुछ महत्वपूर्ण है।

उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत की विविधता और समृद्धि भारतीय संस्कृति का गौरव है। इन दोनों प्रमुख शाखाओं के अंतर्गत लक्ष्य को दृष्टि में रखते हुए, उनका समावेशित अध्ययन भारतीय संगीत के परंपरागत और सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करता है। इस अध्याय में, उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत के आवश्यकता और महत्व का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है, जो हमें इस अद्वितीय संगीत की गहराई और विविधता को समझने में मदद करता है। तृतीय अध्याय ध्वनिमुद्रण की कार्यप्रणाली से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। जिसके अंतर्गत संगीत में टेक्नोलोजी का प्रयोग संगीत और टेक्नोलॉजी के अद्वितीय मिलन में ध्वनिमुद्रण की कार्यप्रणाली में बहुत सुधार हुआ है। आज के युग में, संगीत के ध्वनिमुद्रण की तकनीकों में वृद्धि हो रही है, जो ध्वनिमुद्रण के विभिन्न माध्यमों को प्रभावी बनाती है। ध्वनिमुद्रण का इतिहास अत्यंत प्राचीन है, जिसमें संगीत को रिकॉर्ड करने के लिए विभिन्न प्रकार के माध्यम उपयोग किए जाते थे। शुरुआती ध्वनिमुद्रण का उदाहरण 78 आर.पी.एम. एलपी रिकॉर्ड्स के रूप में था, जो संगीत को ध्वनिमुद्रित करने के लिए उपयोग होता था। फिर स्पूल, औडियो-वीडियो कैसेट्स, कोम्पैक्ट डिस्क, और अब पेन ड्राइव, हार्ड डिस्क, सर्वर जैसे डिजिटल माध्यम, जिन्हें संगीत को स्टोर और शेयर करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। ध्वनिमुद्रण को संग्रह करने के लिए कई माध्यम हैं, जो इसके विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 78 आर.पी.एम. एलपी रिकॉर्ड्स शुरुआती ध्वनिमुद्रण के प्रमुख माध्यम थे, जो ध्वनिमुद्रण को बनाए रखने और संगीत को प्रसारित करने में मदद करते थे। स्पूल भी ध्वनिमुद्रण के प्रमुख माध्यमों में शामिल होते हैं, जो किसी भी

संगीत को स्टोर करने और सुनने के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। औडियो-वीडियो कैसेट्स और कोम्पैक्ट डिस्क भी संगीत को ध्वनिमुद्रित करने और संगीत को स्टोर करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। हाल ही में, डिजिटल माध्यम जैसे पेन ड्राइव, हार्ड डिस्क, सर्वर आदि ने ध्वनिमुद्रण के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। ये उन्नत तकनीकी माध्यम संगीत को डिजिटल रूप में संग्रहित करने और साझा करने में मदद करते हैं, जिससे संगीत का उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक सुलभ हो जाता है। ध्वनिमुद्रण की कार्यप्रणाली में यह तकनीकी अद्यतन और संग्रह के माध्यमों की प्रगति हमें संगीत के अनुभव को और भी सुगम और सुलभ बनाती है। इससे संगीत का विस्तार और प्रसार होता है और संगीत प्रेमियों को अपनी पसंदीदा संगीत का आनंद लेने में और भी आसानी होती है। ध्वनिमुद्रण की इस प्रकार की कार्यप्रणाली ने संगीत को आम लोगों के बीच और अधिक प्रसिद्ध और पहुंचने वाला बना दिया है।

चतुर्थ अध्याय ग्रंथालय, सांगीतिक ग्रंथालय, अभिलेखागार, ध्वनिलेखागार और ध्वनिलेखपाल से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इसके अंतर्गत विषय की व्याख्या की गई है ग्रंथालय एक स्थान होता है जहां लेखों, पुस्तकों, और अन्य संदर्भ सामग्री का संग्रह होता है। यहाँ पर किताबें, पत्रिकाएं, जर्नल, रिपोर्ट्स, और अन्य साहित्यिक सामग्री रखी जाती है। ग्रंथालयों के कई प्रकार होते हैं, जैसे कि राष्ट्रीय ग्रंथालय, शैक्षणिक ग्रंथालय, सार्वजनिक ग्रंथालय, और विशिष्ट ग्रंथालय। सांगीतिक ग्रंथालय संगीत से संबंधित पुस्तकों, लेखों, और अन्य संदर्भ सामग्री का संग्रह करता है। यहाँ पर संगीत से संबंधित विभिन्न विषयों पर गहन अध्ययन के लिए साहित्य उपलब्ध होता है। अभिलेखागार एक स्थान होता है जहां महत्वपूर्ण दस्तावेज़, संदर्भ सामग्री, और अन्य ऐतिहासिक विवरण संग्रहित होते हैं। यह अनुसंधान और अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत होता है और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। ध्वनिलेखागार एक विशेष प्रकार का अभिलेखागार होता है जो संगीत के ध्वनिमुद्रणों का संग्रह करता है। यहाँ पर संगीत की विभिन्न प्रकारों के ध्वनिमुद्रण संग्रहित किए जाते हैं, जो संगीत के इतिहास, परंपरा, और विकास को समझने में मदद करते हैं। ध्वनिलेखपाल एक व्यक्ति होता है जो ध्वनिलेखागार का प्रबंधन करता है और संगीत के ध्वनिमुद्रणों को संरक्षित रखता है। ध्वनिलेखपाल संगीत संग्रहों की देखभाल और संरक्षण

के लिए जिम्मेदार होता है और संगीत संग्रहों को सुरक्षित रखने में सहायक होता है। ध्वनिलेखागार, संगीत संग्रहों का महत्वपूर्ण स्रोत होता है जो संगीत की प्राचीनता, परंपरा, और विविधता को संरक्षित रखता है। यह संगीत प्रेमियों को संगीत के विभिन्न आयामों को समझने और उसका आनंद लेने का अवसर प्रदान करता है। इसके अलावा, ध्वनिलेखागार संगीत के इतिहास और विकास को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह संगीत संग्रहों की देखभाल और संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है।

पंचम अध्याय ध्वनिलेखागार की मर्यादायें एवं निवारक उपाय से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे ध्वनिलेखागार की मर्यादाएं उसके संरक्षण और संग्रह को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। यहाँ व्यक्तिगत ध्वनिलेखागार और सार्वजनिक ध्वनिलेखागार के लिए अलग-अलग मर्यादाएं होती हैं। व्यक्तिगत ध्वनिलेखागार में, संगीत के ध्वनिमुद्रणों की संरक्षण के लिए सुरक्षा और अनुमति की मर्यादाएं होती हैं। सार्वजनिक ध्वनिलेखागार में, सार्वजनिक पहुंच और उपयोग के लिए निर्देशिका और नियम होते हैं। इन मर्यादाओं का पालन करना आवश्यक है ताकि संगीत की सार्वजनिक संरक्षण और प्रदर्शन की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके।

ध्वनिलेखागारों को सुरक्षित रखने और संरक्षित करने के लिए कई निवारक उपाय होते हैं। इनमें सुरक्षा, तकनीकी संरक्षण, और प्रबंधन के माध्यम शामिल होते हैं। सुरक्षा के लिए, ध्वनिलेखागारों को सुरक्षित करने के लिए चोरी और हानि से बचाने के लिए सुरक्षा प्रणालियों का अनुसरण किया जाना चाहिए। तकनीकी संरक्षण के लिए, ध्वनिलेखागारों को ध्वनिमुद्रणों के डिजिटल रूप में संरक्षित करने के लिए विभिन्न तकनीकी सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए। प्रबंधन के माध्यम से, ध्वनिलेखागारों को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने और संरक्षित करने के लिए प्रबंधन प्रक्रियाएं अनुमानित की जाती हैं। इन निवारक उपायों के माध्यम से, ध्वनिलेखागारों को सुरक्षित रखा जा सकता है और संगीत के महत्वपूर्ण संदर्भ सामग्री को संरक्षित किया जा सकता है। यह सुनिश्चित करने का एक माध्यम है कि संगीत की धनी विरासत को आगे बढ़ाया जा सके और उसे भविष्य की पीढ़ियों को समर्पित किया जा सके, उपायो के विषय में विस्तृत चर्चा की गई है। सामान्य जनता जो उत्तर भारतीय

शास्त्रीय गायन में रसमग्न है, उसे ध्वनिलेखागार किस तरह से मददगार हो सकता है, यह संभावनाओ का वर्णन प्रस्तुत अध्याय में किया गया है।

षष्ठम अध्याय ध्वनिलेखागार विषयक सर्वेक्षण और निष्कर्ष से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण और निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

ध्वनिलेखागार विषयक सर्वेक्षण का उद्देश्य ध्वनिलेखागारों के वर्तमान स्थिति, उनकी क्षमता, उनकी आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना और उनके विकास की संभावनाओं का मूल्यांकन करना होता है। इसके माध्यम से, ध्वनिलेखागारों की वर्तमान स्थिति के बारे में सही जानकारी प्राप्त की जा सकती है, जिससे ध्वनिलेखागारों को विकसित करने और सुधारने के लिए उपाय किए जा सकते हैं। सर्वेक्षण के दौरान, विभिन्न पहलुओं जैसे कि संग्रहण, संरक्षण, पहुंच, और प्रदर्शन के लिए अभिनव तकनीकी और प्रबंधन के माध्यमों का विश्लेषण किया जाता है। साथ ही, संगीत संरक्षण की भूमिका और महत्व पर भी ध्यान दिया जाता है ताकि संगीत की धनी विरासत का संरक्षण किया जा सके। ध्वनिलेखागार विषयक सर्वेक्षण के आधार पर कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। पहला निष्कर्ष यह है कि ध्वनिलेखागारों की संख्या में वृद्धि होने के साथ-साथ, उनका संग्रहण, संरक्षण, और प्रबंधन में भी सुधार की आवश्यकता है। इसके साथ ही, संगीत संरक्षण की महत्वपूर्णता को बढ़ावा देने के लिए ध्वनिलेखागारों को नए और नवाचारी तकनीकी और प्रबंधन के उपायों से सुसज्जित किया जाना चाहिए। इसके अलावा, ध्वनिलेखागारों को सार्वजनिक सेवाओं के लिए और अधिक पहुंचने योग्य बनाने के लिए नए प्रोत्साहन योजनाओं की आवश्यकता है। अंत में, ध्वनिलेखागारों की संरक्षण की महत्वपूर्णता को समझते हुए, इनका समृद्धिकरण और विकास सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के सहयोग से किया जाना चाहिए। यह सभी उपाय संगीत की धनी विरासत को संरक्षित रखने और उसे आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सप्तमअध्याय मे सुझाव और उपसंहार से संबंधित विषय को ध्यान मे रख कर लिखा गया है। इस अध्याय मे शोधार्थी द्वारा समग्र शोध कार्य संबन्धित सुझाव और उपसंहार दर्शाया है। ध्वनिलेखागार विषयक सुझाव और उपसंहार के लिए उत्तराधिकारी प्राधिकरणों को सही दिशा देने की जरूरत है। संगीत संरक्षण के क्षेत्र में सार्वजनिक-निजी संस्थाओं के सहयोग को मजबूत करने के लिए सार्वजनिक

ध्वनिलेखागारों को समर्थन प्रदान करना चाहिए। नवीनतम तकनीकों का उपयोग करके संगीत संरक्षण को सुधारा जा सकता है, जिससे ध्वनिलेखागारों की प्रदर्शित सामग्री और संग्रहण क्षमता में वृद्धि हो। इसके साथ ही, संगीत को अधिक से अधिक लोगों के साथ साझा करने के लिए संगीत प्रसारण के माध्यमों का उपयोग किया जा सकता है। इस रूप में, ध्वनिलेखागार समृद्ध और सार्वजनिक पहुंच के साथ संगीत की धरोहर को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।ध्वनिलेखागार से उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के ध्वनिमुद्रणों की (मेटा-डेटा) सूची के रूप उपलब्ध हुई हैं, जो इसमें समाविष्ट की गयी है।